भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 181

03.02.2025 को उत्तर के लिए

जलवायु परिवर्तन संबंधी राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (एनएएफसीसी)

181. डॉ. शशि थरूरः

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (एनएएफसीसी) के तहत परियोजनाओं का निर्णय जलवायु परिवर्तन संबंधी राज्य कार्य योजना (एसएपीसीसी) के तहत चिह्नित किए गए क्षेत्रों के आधार पर किया जाता है;

(ख) यदि हां, तो जलवायु परिवर्तन के लिए केरल राज्य अनुकूलन कोष 2023-2030 (केरल का एसएपीसीसी 2.0) द्वारा किन-किन क्षेत्रों को सबसे कमजोर क्षेत्रों के रूप में चिह्नित किया गया है;

(ग) क्या केरल में एनएएफसीसी की स्वीकृत परियोजना (केरल के तटीय आर्द्रभूमि में कैपद पोक्कली की एकीकृत कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना) में चिन्हित किए गए नौ जिलों में केवल दो ही जिले (कन्नूर और अलप्पुझा) शामिल हैं; और

(घ) यदि हां, तो क्या केंद्र सरकार केरल राज्य सरकार के समन्वय से, एसएपीसीसी द्वारा सबसे कमजोर क्षेत्र के रूप में चिह्नित केरल के अन्य जिलों को कवर करने वाले एनएएफसीसी के तहत अतिरिक्त परियोजनाओं को मंजूरी देने पर विचार कर रही है?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (एनएएफसीसी) का एक प्रमुख उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (एनएपीसीसी) और राज्य जलवायु परिवर्तन कार्य योजनाओं (एसएपीसीसी) के अंतर्गत प्रासंगिक मिशनों के साथ संरेखित कंक्रीट जलवायु अनुकूलन परियोजनाओं/कार्यक्रमों को वित्तपोषित करना है। संबंधित राज्य सरकारों ने अपने राज्य जलवायु परिवर्तन कार्य योजनाओं के साथ मिलकर राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष के अंतर्गत परियोजनाएं तैयार कीं।

(ख) केरल के एसएपीसीसी 2.0 के अनुसार, निम्नलिखित जिलों की पहचान क्षेत्रवार अत्यधिक संवेदनशील के रूप में की गई है:

- कृषि क्षेत्र की दृष्टि से पलक्कड़, वायनाड, कासरगोड, इडुक्की, कोझीकोड, मलप्पुरम, कोट्टायम, कन्नूर और तिरुवनंतपुरम;
- पशुधन की दृष्टि से पलक्कड़, कासरगोड, इडुक्की और कलम;
- तटीय मत्स्य पालन की दृष्टि से कासरगोड, कन्नूर, मलप्पुरम और तिरुवनंतपुरम;
- वनों की दृष्टि से कोल्लम, कोट्टायम, वायनाड और कासरगोड
- मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से कासरगोड, मलप्पुरम और पलक्कड़;
- जल क्षेत्र की दृष्टि से वायनाड, अलप्पुझा, कोट्टायम और कोझिकोड।

(ग) और (घ) एनएएफसीसी परियोजना नामतः "केरल के तटीय आर्द्रभूमि में कैपड़ और पोक्काली की एकीकृत कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना", कन्नूर, अलप्पुझा, त्रिशूर और एर्नाकुलम जिलों में कार्यान्वित की गई। एनएएफसीसी की स्थापना वर्ष 2015 में एनएपीसीसी और एसएपीसीसी के साथ तालमेल में कंक्रीट और प्रारंभिक अनुकूलन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए की गई थी। एनएएफसीसी के तहत वित्तपोषित व्यक्तिगत परियोजनाओं के विभिन्न घटकों का तात्पर्य उस उद्देश्य की प्राप्ति करना था। केंद्रीय बजट वर्ष 2020-21 में कहा गया है कि भारत हितधारकों के भागीदार सहयोग के साथ सामान्य बजटीय प्रक्रिया के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में अपने जलवायु संबंधी कार्यों को लागू कर रहा है। इन ज्ञान को संबंधित एसएपीसीसी में मुख्यधारा में लाया जाता है।

*****